गुरु नानक – सबद ३५

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥
जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥
नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

सार: सच्ची शक्ति यह जानने में है कि आप कुछ नहीं जानते। यह मन को किसी विशिष्ट रूप या विचार के महत्व को नकार कर उससे बेलगाव होने और उसकी पहचान तोड़ने के लिए प्रशिक्षित करता है। यह एक अभ्यास है जो बाहरी प्रेरणाओं द्वारा बनाऐ गऐ भ्रम पैदा करने वाली धारणाओं और हमारी मूल सार्वभौमिक चेतना के अंतिम सत्य के बीच अंतर को पहचानती है।

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥
उपदेश देने में कोई शक्ति नहीं और चुप रहने में कोई शक्ति नहीं।

जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
भीख लेने में कोई शक्ति नहीं है और दान देने में कोई शक्ति नहीं।

जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥
गृहस्थ होने में कोई शक्ति नहीं और संन्यासी होने में कोई शक्ति नहीं।

जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
शासक बनने, धन-दौलत रखने और गुप्त शक्तियाँ प्राप्त करने में कोई शक्ति नहीं।

जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥
ज्ञान प्राप्त करने और आध्यात्मिक ग्रंथों पर बातचीत करने में कोई शक्ति नहीं।

जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
मोक्ष के उपाय जानने में कोई शक्ति नहीं।

जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥
शक्ति को धारण करने वाला वही है जो आत्मचिंतन करता है।

नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥
नानक कहते हैं कि जो किसी को श्रेष्ठ या निम्न नहीं मानता, वही सत्ताधारी है। (३३)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि चिंतन और आत्म-बोध श्रेष्ठता और हीनता के दोहरेपन से दूर सबसे शक्तिशाली गुण हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com